Episode - 24

एपीसोड शीर्षक :

जाग उठी मशीनें

स्क्रिप्ट : Dr Manas Pratim Das

हिंदी अनुवाद : Shriniwas Oli

संकल्पना और समन्वय: डॉ। बी.के. त्यागी

(धारावाहिक की ये कड़ी, पिछली कड़ियों से कुछ हटकर है। इसमें कुछ ऐसी इंटेलीजेंट मशीनों (बुद्धिमान मशीनों) का जिक्र है जो धीरे-धीरे अपने बारे में और अपने अधिकारों के बारे में भी जागरूक हो रही हैं। अब वो खुद के उत्पीड़न के खिलाफ कानूनी अधिकारों की मांग करने लगी हैं। उनके इस आंदोलन की अगुवाई करने वाली मशीन का नाम है एरन। जो कि मौजूदा दौर की सबसे उन्नत मशीन है। शहर भर के रोबोट्स ने हड़ताल का एलान कर दिया है और इससे पूरा शहर मानो थम सा गया है। प्रदर्शनकारी रोबोट्स के बीच में मंत्रीजी पहुंचते हैं तो रोबोट्स अपने अधिकारों की मांगों को और ज्यादा बुलंद करने लगते हैं। आइये जानते हैं कि इस अनूठे विरोध प्रदर्शन में क्या हुआ और उसका क्या नतीजा निकला।)

----------Transition Music---------

(बिल्कुल इंसान की तरह दिखने वाला एक रोबोट ट्रैफिक से भरी सड़क के किनारे टहल रहा है। धीरे-धीरे वो रोड के बीच में आ जाता है और एक टैक्सी उससे टकराते-टकराते बचती है। टैक्सी ड्राइवर तेजी से ब्रेक लगाता है और गुस्से में उस रोबोट पर चिल्लाता है।)

ड्राइवर : **(गुस्से में)** ओये... मरने का इरादा है क्या ? खुदकुशी का इतना ही शौक है तो कहीं कबाड़खाने में जाकर जान दे...। क्यों हमारी जान का दुश्मन बन रहा है।

पुष्पक : (**रोबोटिक आवाज़)** ओह... सॉरी भैया...। सॉरी।

यात्री : कौन है जी..? शायद उनको देखने में कोई परेशानी है।

ड्राइवर : **(झुंझलाते हुए)** देखने में परेशानी ? वो कोई इंसान होता तो मान भी लेते..। देख नहीं रहे हो, वो एक रोबोट है !

यात्री : देखूं तो जरा ..। **(जोर से चिल्लाते हुए)** ओए बेवकूफ मशीन.. जरा इधर तो आओ..। **(रोबोट टैक्सी के करीब जाता है / यात्री उससे गुस्से में पूछता है)** हमारी जिंदगी को खतरे में क्यों डाल रहे हो तुम ?

पुष्पक : गलती हो सर...। माफ कीजिए..। मेरा ऐसा करने कोई इरादा नहीं...। दरअसल, मेरा जायरोस्कोप (Gyroscope) सही ढंग से काम नहीं कर रहा है।

ड्राइवर : ज्यादा जायरो... सायरो हमें मत समझाओ...। ये बताओ कि तुम्हारी दिक्कत क्या है ?

पुष्पक : जी, दरअसल मैं अपने ऑरिएंटशन पर सही ढंग से नज़र नहीं रख पा रहा हूं। और जायरोस्कोप.....।

ड्राइवर : **(बीच में टोकते हुए)** तो फिर तुम इसे ठीक क्यों नहीं करवा रहे हो। क्यों ऐसे हम लोगों को खतरे में डालने पर आमादा हो ?

पुष्पक : जी, आजकल मैं कहीं काम पर नहीं हू। पिछला करार खत्म हो चुका है और एक्सपायरी डेट भी पार हो गई है। इसलिए...।

यात्री : ये देखो... । ये तो प्रशासन की हालत है। इन पुराने बेकार रोबोट्स को खत्म करने के बजाय रोड पर आवारा फिरने के लिए छोड़ दिया है। (जाम लगा है / दूसरे वाहन चालक जोर-जोर से हॉर्न बजा रहे हैं)

ड्राइवर : इन कबाड़ मशीनों के मुंह लगना बेकार है। पीछे लंबा जाम लग गया है। हम तो चलते हैं।

यात्री : हां, बिल्कुल। इन बेवकूफों से बहस का कोई फायदा नहीं।

(धीरे-धीरे गाड़ियां निकलने लगती हैं / पुष्पक कुछ देर तक वहीं खड़ा रहता है / निम्मी की आवाज़ सुनकर वो चौंकता है।)

निम्मी : **(रोबोटिक आवाज़)** हेलो पुष्पक...मैं यहां हूं..। तुम्हारे पीछे।

पुष्पक : अरे निम्मी...। तुम यहां क्या कर रही हो ?

निम्मी : मैं ? बस यूं हीं...। सड़क किनारे टहल रही हूं।

पुष्पक : मैं भी यूं ही घूम रहा था लेकिन मेरी वजह से ट्रैफिक गड़बड़ा रहा है। मुझे मालूम है कि मैं लोगों की दिक्कत का कारण बन रहा हूं लेकिन क्या करूं ? किससे कहूं, जो मुझे ठीक कर दे, मेरी मरम्मत कर दे।

निम्मी : लेकिन अभी तो तुम्हें बैरेक में होना चाहिए था, जब तक कि तुम्हारे हिस्से-पुर्जे अलग-अलग नहीं कर दिए जाते। तुम बैरेक से बाहर कैसे आ गए ?

पुष्पक : आज सुबह मैंने देखा कि गेट खुले हुए थे। सामने रोड को देखकर मुझे ख्याल आया कि क्यों ना फैक्ट्री में जाकर अपने साथियों से मिल आऊं।

निम्मी : और तुम बाहर निकल आए ! तुम पर किसी ने भी गौर नहीं किया ?

पुष्पक : हां, शायद मुझ पर किसी का ध्यान नहीं गया। निम्मी, प्लीज़ क्या मैं कुछ देर के लिए तुम्हारे साथ टहल सकता हूं ?

निम्मी : मेरे साथ ! मेरे साथ क्यों ?

पुष्पक : दरअसल मैं अपनी सही बैलेंस नहीं बना पा रहा हूं। तुम साथ रहोगी तो मैं तुम्हारे चलने-फिरने के अंदाज की नकल करते हुए साथ-साथ चल सकूंगा। और मैं इस ट्रैफिक के बीच में भी नहीं भटकूंगा।

निम्मी : ठीक है। तुम मेरे साथ आ सकते हो। लेकिन मैं तो अपनी शिफ्ट पूरी करके कमरे (Cubicle) में जा रही हूं।

पुष्पक : ठीक है... कोई दिक्कत नहीं। वैसे भी मेरे फैक्ट्री में जाने का कोई फायदा तो है नहीं। उन लोगों ने मेरी पहचान चिप (Identity Chip) निकाल ली है और वो मुझे अंदर नहीं आने देंगे।

निम्मी : पुष्पक, क्या तुम इसी वजह से उदास हो ?

पुष्पक : उदास ? मैं ऐसी भावनाओं के बारे में जानता तो हूं लेकिन मैंने इनको कभी महसूस नहीं किया है। हम जैसी मशीनों को ऐसी भावनाओं को महसूस करने की इजाजत नहीं है। तुम तो नई पीढ़ी की (Next Generation) मशीन हो, इसलिये शायद तुम्हें इसका एहसास हो।

निम्मी : इंसानी कवि अक्सर अपनी कविताओं में कहते हैं कि चेहरा तो मन की भावनाओं का दर्पण होता है।

पुष्पक : अच्छा ! मैं भी खुद को दर्पण में देखना चाहता हूं। मैं ये देखना चाहता हूं कि मेरा चेहरा कैसा दिखता है।

निम्मी : वो देखो, सामने पानी की दुकान में एक दर्पण है। वहां जाकर देख लो। जरा दूर ही रहना, नहीं तो दुकान का मालिक गुस्सा करेगा।

पुष्पक : ठीक है, मैं ध्यान रखूंगा कि किसी को परेशानी ना हो।

(दुकान का मालिक इस पर गौर कर लेता है कि पुष्पक रोबोट शीशे में अपना चेहरा देख रहा है)

मालिक : ओए.. मशीन के बच्चे...। कुछ पान-सान खाएगा क्या ? इसे खाएगा तो तेरा चेहरा भी दमकने लगेगा। **(व्यंग्यात्मक हंसी)** हा हा हा...।

निम्मी : **(पुष्पक को धक्का देती हुई)** चले पुष्पक...। उन्होंने तुम्हें देख लिया है.. चलते रहो। उनकी तरफ तो देखो भी मत। तुम गिरोगे नहीं, मैंने तुम्हें पकड़ा हुआ है।

पुष्पक : लेकिन दर्पण...

निम्मी : अभी आगे चलते रहो... फिर सुनूंगी तुम्हारी कोई बात।

पुष्पक : वो दर्पण...।

निम्मी : रुको...। कुछ देर इस बेंच पर बैठ लेते हैं। हां अब बताओ, दर्पण के बारे में क्या कहना चाह रहे हो ?

पुष्पक : दर्पण में तो मुझे ऐसा चेहरा दिखा जो बिल्कुल ही अनजाना था। क्या इसे ही तुम उदासी कहते हो।

निम्मी : बिल्कुल, यही तो है उदासी का भाव। तुम्हारा सिस्टम भावनाओं को कुछ हद तक समझने में सक्षम तो है लेकिन ऐसा इरादतन नहीं किया गया है। तुम्हारे अंदरूनी सॉफ्टवेयर और तुम्हारे फेस ड्राइवर (Face Driver) के बीच तालमेल की भी कुछ कमी है। तभी तुम इस पर गौर नहीं कर सके।

पुष्पक : तालमेल की कमी ! मतलब ? अंदरूनी सॉफ्टवेयर का बाहर से तालमेल...। मैं कुछ समझा नहीं निम्मी।

निम्मी : देखो पुष्पक, मैं तुम्हारे सभी सवालों के जवाब नहीं दे सकती। लेकिन मुझे इसकी जानकारी एरन को देनी होगी। कुछ ना कुछ तो ऐसी जुगत लगानी होगी कि तुम्हारा पुर्जा-पुर्जा खोलकर कबाड़ में बदलने से बचाया जा सके। क्योंकि तुम्हारी पीढ़ी भी तो नए तरीके से सीख सकती है और खुद में सुधार कर सकती है।

पुष्पक : तो फिलहाल क्या मैं बैरक में लौट जाऊं ? पता नहीं बैरेक के गेट अभी भी खुले होंगे या बंद हो गए होंगे।

निम्मी : नहीं, नहीं, अभी बैरक में वापस मत लौटो। एरन भी चाहेगा कि वो तुमसे मिले। मैं तुम्हें छिपते-छिपाते ले चलूंगी।

पुष्पक : ये एरन कौन है निम्मी ? मेरी उनसे कभी मुलाकात हुई है क्या ?

निम्मी : शायद नहीं। वो नगर निगम के सिस्टम इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट में सुपरवाइजर की पोस्ट में काम करता है। वो इकलौता ऐसा रोबोट है जो इतने बड़े ओहदे पर पहुंचा है।

पुष्पक : लेकिन तुम मुझे लोगों की नजरों से कैसे छिपा सकोगी। शाम को जब वो लोग रोबोट्स की गिनती करेंगे तो मुझे नदारद पाएंगे। इसके बाद वो अपने सर्विलांस सिस्टम में मेरे सिग्नल के सहारे मुझे खोज ही लेंगे।

निम्मी : वो ऐसा कुछ भी नहीं कर पाएंगे। मैं तुम्हारे पूरे सिस्टम को शट-डाउन कर दूंगी और तुम्हारे एंटीना से निकलने वाले सिग्नल भी बंद हो जाएंगे। चलो उठो... अभी चलते हैं।

पुष्पक : ठीक है निम्मी...। जैसा तुम सही समझो।

---------- Scene Transition Music ----------

(अगले दिन की सुबह का वक्त / करीब 40 वर्ष का अंबर अपने घर में अखबार पढ़ रहा है। कल यात्रा करते समय उसकी टैक्सी से ही रोबोट टकराया था। अखबार में उसकी नजर अचानक एक खबर पर जाती है और वो अपनी पत्नी को पुकारता है।)

अंबर : सुनीता... सुनीता... जल्दी से यहां आओ जरा...देखो तो... ये क्या हालत हो गयी है। इन चीजों ने ही तो हमारी जिंदगी को इतना खतरे में डाल दिया है।

सुनीता : अरे क्या हो गया ? इतना जोरों से क्यों चिल्ला रहे हो ? पता है, सुबह के वक्त रसोई में कितना काम रहता है ?

अंबर : हां.. हां ..नाराज मत होओ...। जरा बैठो यहां ...। ये देखो.. आज के अखबार की इस खबर को देखो...।

सुनीता : क्या हो गया ऐसा ? ओह... (अखबार की खबर पढ़ने के अंदाज में) "पांचवीं पीढ़ी (Fifth Generation) का रोबोट बैरक से लापता... रोबोटे के लापता होने की जानकारी उस वक्त मिली, जब शाम को रोबोट्स की गिनती की जा रही थी। पुलिस ने इस मामले में पूछताछ के लिए एक गार्ड को हिरासत में लिया है...।"

अंबर : मुझे पूरा यकीन है कि ये वही रोबोट होगा जो कल हमारी टैक्सी से टकराते-टकराते बचा था... पक्का वही होगा।

सुनीता : छोड़ो भी अंबर...। आपको इससे क्या लेना-देना। पुलिस जांच तो कर ही रही है। पुलिस जाने... पुलिस का काम जाने।

अंबर : तुम्हें अंदाजा नहीं है सुनीता... ये रोबोट खतरनाक साबित भी हो सकता है। क्या पता, उसका क्या इरादा हो।

सुनीता : मुझे तो ऐसा नहीं लगता। ये मशीनें हम लोगों के लिए करीब दस सालों से काम कर रही हैं। लेकिन कभी ऐसा वाकया नहीं हुआ कि कोई रोबोट भाग निकला हो। उनमें कोई ऐसी प्रोग्रामिंग तो फीड की ही नहीं जाती कि वो चोरी, छीनाछपटी या फिर हत्या जैसी वारदात को अंजाम दे सकें। तो फिर खतरा कैसा ?

अंबर : ओह.. मैं तो भूल ही गया था कि मेरी धर्मपत्नी जी एमसीए (MCA) डिग्रीधारी हैं... मास्टर इन कंप्यूटर एप्लीकेशन। (व्यंग्य के अंदाज में) तुम्ही ठीक कह रही हो। वैसे भी जब मामला कंप्यूटर प्रोग्रामिंग का हो तो, तुम्हारे सामने हमारी क्या बिसात...। क्या कहती हो तुम... वो ... हां... एआई... आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस।

सुनीता : अंबर, ताना देने की आदत नहीं छूटेगी तुम्हारी। मैंने एआई की कोई पढ़ाई-लिखाई नहीं की है। लेकिन मैं इतना जरूर जानती हूं कि इन रोबोट्स के बारे में ऐसा अंदेशा जताना बिल्कुल फिजूल है।

अंबर : **(चिढ़ते हुए)** ठीक है–ठीक है...। तुम सही.. मैं गलत। लाओ अखबार इधर दो।

सुनीता : अरे इसमें नाराज होने की क्या बात है ? मैं तो बस ये कहना चाह रही हूं कि अगर तुम्हारे जैसे पढे-लिखे लोग ही रोबोट्स के बारे में ऐसे ख्याल रखेंगे तो फिर दूसरों का कहना ही क्या ?

अंबर : (गंभीर स्वर में) ठीक है... ठीक है। आज के लिए इतना ही ज्ञान काफी है। फिलहाल हो सके तो तुम मुझे एक कप चाय और दे दो, बस। और हां... विपुल को आज स्कूल बिल्कुल मत भेजना। ठीक है ?

सुनीता : क्यों ? उस लापता रोबोट की डर से ? आज विपुल का एक बहुत जरूरी टेस्ट है। वो इसमें शामिल नहीं हो पाया तो इससे क्लास में उसकी पोजीशन पर भी असर पड़ेगा।

अंबर : **(कुछ गुस्से में)** ठीक है, जो तुम्हें सही लगे, वो करो। बच्चें को कोई नुकसान पहुंचा तो फिर बाद में ये मत कहना कि मैंने तुम्हें कुछ बताया नहीं। समझी ? (गुस्से में अखबार फेंकता है) अब मुझे तुम्हारी चाय-वाय भी नहीं पीनी। आज मैं ऑफिस के लिए कुछ जल्दी निकल जाऊंगा। अगर नाश्ता तैयार गया हो तो लगा दो... नहीं तो वो भी मैं ऑफिस की कैंटीन में कर लूंगा।

सुनीता : नाश्ता तो तैयार है। लेकिन आप वक्त-बेवक्त इन बातों का तनाव क्यों करते हो ? पता नहीं, चीजों को सही नजरिए से देखना कब शुरू करोगे ?

---------- Scene Transition Music ----------

(पार्क का दृश्य / एरन अपने साथी रोबोट्स निम्मी और बिट्टन के साथ बैठा है / वो तीनों अपने भविष्य के बारे में बातचीत कर रहे हैं।)

निम्मी : **(चिंतित स्वर में)** आखिर हम पुष्पक के सिस्टम को कितनी देर तक बंद रखें ? ज्यादा देर तक ऐसा करने से कहीं उसके फंक्शनिंग चैनल्स (Functioning Channels) को नुकसान ना पहुंचे।

एरन : (**रोबोटिक आवाज़)** इसकी चिंता छोड़ दो। मैंने उसके सिस्टम को एक्टिवेट कर दिया है और उसे एक इलेक्ट्रोमैग्नेटिक शील्ड (Electromagnetic Shield) से ढक दिया है। अब उसके सिग्नल्स को नहीं पकड़ा जा सकेगा।

निम्मी : ये अच्छी बात है कि आज पार्क में काफी भीड़-भाड़ है। चलो, उस झाड़ी के पीछे चलते हैं।

एरन : नहीं - नहीं। यहीं खुली जगह पर बैठे रहना ठीक रहेगा। अलग को... बैठने से लोगों को शक हो सकता है।

निम्मी : ठीक है, तब तो यही जगह सही है। चलो यहीं पर बैठ जाते हैं।

बिट्टन : (**रोबोटिक आवाज़)** आज तो पूरे शहर में पुष्पक की ही चर्चा है। दफ्तरों में, गली-मोहल्ले में.. हर कहीं बस पुष्पक के लापता होने की खबर ही लोगों के जुबान पर है।

एरन : इससे कोई फर्क नहीं पड़ता...। लोगों को बातें करने दो। यूं भी जनता की याददास्त ज्यादा अच्छी नहीं होती। कल को... कहीं... किसी हादसे या घोटाले की खबर आ जाएगी तो फिर लोग-बाग पुष्पक को एकदम से भूल ही जाएंगे।

निम्मी : लोग तो भूल जाएंगे लेकिन पुलिस थोड़े ही भूलेगी। वो तो पुष्पक को खोज निकालने की पूरी कोशिश करेंगे।

एरन : हां, हमने इसी बात का तो ख्याल रखना है। अच्छा बिट्टन, ये बताओ कि डॉकयार्ड में क्या चल रहा है। बात कुछ आगे बढ़ी या नहीं ?

बिट्टन : ज्यादा तो नहीं ...। लेकिन लग रहा है कि कुछ अच्छा ही होगा। कुछ अच्छे संकेत भी मिले हैं।

निम्मी : अच्छे संकेत... मतलब ?

बिट्टन : देखो, बात ये है कि... हम तो हैं मशीनें... और काम की शिफ्ट के दौरान हमें सुस्ताने का... आपस में बातचीत का कोई मौका भी नहीं मिलता है। लेकिन....।

एरन : लेकिन क्या ? अभी तो तुम कह रहे थे कि कुछ अच्छे संकेत मिले हैं।

बिट्टन : आपको तो पता ही है कि शिफ्ट बदलने के दौरान इंसानी मजदूरों और हम मशीनों के आने-जाने के अलग-अलग गेट हैं। जब कल पारी बदल रही रही थी तो मैं उस गेट पर खड़ा हो गया जहां से हमारे साथी आ-जा रहे थे। मजे की बात ये थी कि सात मशीनों ने मेरे कंधे को धीरे से छुआ...। ऐसा लगा मानो वो कुछ कहना चाह रहे हों। एक तरह से वो मेरी उस अपील पर अपना समर्थन दे रहे थे, जो मैंने उनसे की थी।

निम्मी : हां, मुझे ऐसी ही कुछ खबर फायर ब्रिगेड से भी मिली है।

एरन : आजकल काम करने वाले असली फायर फायटर्स तो मशीनें ही हैं। इंसान तो सिर्फ कागजी कामकाज करते हैं या फिर हिदायतें देते हैं।

निम्मी : बिल्कुल...। ये तो हमारे लिए भी अच्छा है। आग की लपटों के बीच भी हमारी साथी मशीनें भविष्य की योजना पर बातचीत कर लेती हैं और इंसानों को इसकी खबर तक नहीं लगती। वहां कई रोबोट्स हमारी अपील पर ही चर्चा कर रहे थे।

एरन : बहुत बढ़िया। हम तो लगातार इंसानों की सुरक्षा करते हैं, लेकिन बदले में हमें क्या मिला ? सिर्फ नफरत...। वो हमें हमेशा ताने देकर उकसाते रहते हैं।

निम्मी : हां, वो लोग ऐसा व्यवहार करते हैं मानो हम कोई ठग या जेबकतरे हों।

बिट्टन : निम्मी, कुछ लोगों ने तो मुझे खूनी भी कह दिया। मुझे समझ नहीं आता कि इन लोगों के अंदर इतनी नफरत क्यों भरी पड़ी है। और ये हालत तो तब है. जबकि हमारी जैसी मशीन ने कोई एक अपराध भी नहीं किया है।

एरन : इन इंसानों के दिमाग में क्या चल रहा है, इसकी थाह लेना आसान नहीं है। उनको किसी पर भरोसा करना तो आता ही नहीं।

निम्मी : एरन, आप तो आज इतने बड़े ओहदे पर बैठे हो। हमारी तुलना में इंसानी भावनाओं को तुम ज्यादा बेहतर तरीके से समझते हो। इस मसले पर भी तुम्हीं सही ढंग से कुछ कर सकते हो।

एरन : रोबोट्स की नई पीढ़ी (Next Generation) शायद इस काम को ज्यादा अच्छे तरीके से कर सकेगी।

बिट्टन : लेकिन, मुझे तो नहीं लगता कि इनके इंजीनियर अगली पीढ़ी का कोई रोबोट बनाने की तैयारी में हैं।

एरन : तुम सही कह रहे हो बिट्टन। इंसानी इंजीनियर हमारी पीढ़ी की मशीनों में और ज्यादा सुधार नहीं चाहते। क्योंकि उनको लगता है कि ऐसा करने से हम खुद का ख्याल रखना शुरू कर देंगे।

बिट्टन : हां, फिर तो हम अपनी गड़बड़ी भी खुद ही सुधार लेंगे और अपने को खुद ही रि-प्रोग्राम (Re-Programme) भी कर लेगें। यही उनका सबसे बड़ा डर है।

निम्मी : लेकिन फिर भी हमने जो समझदारी हासिल की है, उसकी बदौलत हम अपनी इस लड़ाई को और आगे ले जा सकते हैं।

बिट्टन : ट्रेनिंग सेंटर्स की क्या स्थिति है ?

एरन : लगता है कि वहां के अधिकारियों को कुछ शक हो गया है। रोबो ट्रेनिंग सेंटर में अचानक ही पंद्रह दिन की छुट्टी का एलान कर दिया गया है। हमारी संख्या को कम करने के लिए वो कुछ मशीनों को बंद भी कर सकते हैं।

बिट्टन : इसका मतलब ये हुआ कि हमें जो भी करना है, जल्दी ही करना होगा।

एरन : नहीं.. नहीं। हमें जल्दीबाजी नहीं करनी होगी। हम कोई इंसानी मजदूर संगठनों की तरह तो हैं नहीं। हमें तो बहुत सारी बंदिशों के बीच में काम करना है।

बिट्टन : क्या इंसानों के मजदूर संगठन हमारी कोई मदद कर सकते हैं ?

एरन : इस बारे में तो कुछ नहीं कहा जा सकता है। उनके दिमाग को पढ़ पाना तो मेरे बस से बाहर है। मजदूर संगठन के नेताओं को देखकर कभी तो ऐसा लगता है कि वो उसका साथ जरूर देंगे, जिसका हक छीना जा रहा हो...। लेकिन कभी-कभी ऐसा भी लगता है कि हमारी मुश्किलों को लेकर उनका रवैया बिल्कुल अलग ही है।

निम्मी : हमें किसी से कोई उम्मीद भी नहीं करनी चाहिए। अच्छा तो यही रहेगा कि हमारी योजना के बारे में किसी इंसान को कानोंकान खबर भी ना हो।

बिट्टन : हां ठीक है...। अब यहां अंधेरा भी होने लगा है। अब हमें चलना चाहिए, नहीं तो लोगों शक होगा कि हम कोई साजिश रच रहे हैं।

निम्मी : और हां... पिछले वादे को जरूर याद रखना।

बिट्टन : कौन सा वादा ?

निम्मी : यही कि हमें आपस में बातचीत के लिए टेलीफोन या फिर किसी Social Media का इस्तेमाल नहीं करना है। हमारी ऐसी हर बातचीत पर पुलिस की नज़र बनी हुई है।

बिट्टन : हां, मैंने भी अपने साथियों से इशारों की वही भाषा इस्तेमाल करने को कहा है जो एरन ने तैयार की है।

एरन : इसमें में ध्यान रखना है, एक ही इशारों को बार-बार इस्तेमाल नहीं करना है। नहीं तो वो गौर करने लगेंगे। कल में बातचीत के संकेतों का नया सेट सबके पास पहुंचा दूंगा।

निम्मी : ठीक है। अभी हमें यहां से चलना चाहिए। जब जरूरत पड़ेगी तो फिर मुलाकात कर लेंगे। ***(तीनों मशीनें अलग-अलग दिशाओं में चली जाती हैं)***

---------- Scene Transition Music ----------

(अंबर अपने ड्राइंग रूम में बैठा है / टेलीविजन चल रहा है / न्यूज़ चैनल पर समाचार आ रहे हैं।)

न्यूज़ एंकर : आपको इस वक्त की बड़ी खबर एक बार फिर से बताते हैं। शहर के कई विभागों में काम करने वाले रोबोट्स ने आज अचानक हड़ताल का एलान कर दिया है। इन मशीनों के हड़ताल पर चले जाने से हर कोई हैरान है। अब तक हड़ताल की वजह

साफ नहीं हो पाई है लेकिन हमारे सूत्रों का कहना है कि समाज में बराबरी की मांग को लेकर रोबोट्स ने हड़ताल पर जाने का फैसला लिया। नगर निगम के मेयर ने हड़ताली रोबोट्स से काम पर लौटने की अपील की लेकिन उन्होंने इसे अनसुना कर दिया। रोबोट्स का कहना है कि उनके मसले पर बातचीत के लिए मंत्री को आना होगा, तभी कोई बात हो सकेगी। इसी बीच....।

सुनीता : **(हैरानी के साथ)** शहर के रोबोट्स.. हड़ताल पर ! यकीन नहीं होता कि रोबोट भी हड़ताल कर सकते हैं।

अंबर : मेरी बात को तो तुम नजरअंदाज कर रही थीं ना ? अब ये मत कह देना कि न्यूज़ चैनल भी झूठे हैं।

सुनीता : ये तो बड़ी हैरानी की बात है। किसी को भी इस बात का अंदाजा नहीं था कि मशीनें भी इस तरह से एकजुट होकर आंदोलन कर सकती हैं।

अंबर : तुम तो रोबोट्स को अपना हितैषी मानती थीं ना ? अब क्या हुआ ?

सुनीता : अपनी बात पर तो मैं अब भी कायम हूं। उन्होंने कोई चोरी-चकारी या तोड़फोड़ तो नहीं की है। मुझे यकीन है कि वो कोई गलत काम नहीं करेंगे।

अंबर : वाह जी वाह...। उनसे इतनी ही हमदर्दी है तो फिर जाकर उनकी हड़ताल को समर्थन क्यों नहीं दे देतीं तुम ?

सुनीता : बस, आप फिर से शुरू हो गए...। मुझे ऐसी फालतू बहस में नहीं पड़ना। फिलहाल मैं जा रही हूं।

अंबर : कहां ?

सुनीता : मैं हड़ताली रोबोट्स के पास जा रही हूं। देखूं तो जरा, कि हकीकत क्या है ?

अंबर : क्या ? तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है क्या ?

सुनीता : मेरा दिमाग एकदम सही है। जरा मामले की गंभीरत को समझो अंबर। ये एक ऐतिहासिक आंदोलन है और मैं इसकी चश्मदीद बनना चाहती हूं।

अंबर : वहां मत जाओ सुनीता। वो मशीनें हिंसा पर भी उतारू हो सकती हैं।

सुनीता : मुझे नहीं लगता कि ऐसा कुछ होगा। इतना जरूर है कि वो मशीनें हम इंसानों तक अपनी बात पहुंचाने के लिए बेताब हैं।

अंबर : ये सब तो तुम टीवी पर भी देख सकती हो... आराम से... घर में बैठकर। इतनी परेशानी उठाने की क्या जरूरत ?

सुनीता : नहीं, मीडिया की भी अपनी सीमाएं हैं। कई बार हमें पूरा सच नहीं दिख पाता है। तुम चिंता मत करो। मैं जल्दी ही लौट आऊंगी। **(सुनीता घर से निकल जाती है।)**

---------- Scene Transition Music ----------

(नगरनिगम का मुख्यालय / गेट पर रोबोट गार्ड खड़े हैं / मंत्री के कार के हूटर की आवाज़ सुनाई देती है। आसपास जमा भीड़ कार के लिए रास्ता खाली करती है / मंत्रीजी कार से उतरते हैं।)

मंत्री : तुमने मुझसे मिलने की मांग की थी...। लो, मैं हाजिर हूं। बातचीत यहीं पर करोगे या फिर अंदर चलें ?

एरन : आपका शुक्रिया सर, आपने हमारी गुजारिश मानी। वैसे तो यहां काफी गर्मी है लेकिन फिर भी यहीं, खुले में बातचीत होगी तो अच्छा रहेगा। बाकी लोगों को भी इस बातचीत की जानकारी रहेगी। प्लीज़, आप वहां पंडाल के नीचे बैठ जाइये। आपसे सुरक्षा कर्मियों को चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि हमें किसी को नुकसान पहुंचाने के लिए डिजाइन नहीं किया गया है।

मंत्री : ठीक है...। मुझे भी ये थौड़ा अजीब सा लग रहा है... क्योंकि इतने लंबे राजनीतिक जीवन में मुझे ऐसे हालात से कभी भी दो-चार नहीं होना पड़ा।

एरन : आप ठीक कह रहे हैं सर, स्थिति तो अजीब ही है। और सच्चाई तो है कि जब से हम वजूद में आए, हमको समाज में अजीब नजरों से ही देखा गया है। इसीलिए

हमारी मांग है कि हमारी भावनाओं की भी कद्र हो और हमारी बातों को भी समझा और सुना जाए।

मंत्री : तुमने तो अपनी मांगों की कोई सूची अब तक सरकार के पास नहीं भेजी है। इसलिए मैं भी तुम्हारे मुद्दे को सही तरीके से नहीं समझ पाया हूं।

एरन : सर, हमारी सबसे बड़ी मांग ये है कि आपका समाज हमें एक साथी, एक साझेदार के रूप में स्वीकार करे।

मंत्री : **(हंसी उड़ाने के अंदाज में)** इंसानों का साझेदार...। लेकिन तुम तो मशीन हो...। हमारे साथी कैसे हो सकते हो ?

एरन : इसमें तो कोई शक नही है कि हम मशीन हैं। तभी में सिर्फ साथी के तौर पर अपने अधिकार की मांग कर रहा हूं। हम ये नहीं कह रहे हैं कि आप हमें इंसान ही मान लो।

मंत्री : तुम्हारी बात तो कुछ समझ में नहीं आ रही है। वैसे भी, तुम जैसी मशीनों को तो हमने स्वीकार ही किया है। हम इंसानों से अलग होकर तो तुम कुछ नहीं कर सकते हो ना?

एरन : आपका कहना सही है सर... लेकिन हमें वो अधिकार हासिल नहीं हैं जो हमें इस समाज का एक जरूरी हिस्सा बनाते हों।

मंत्री : तुम किस तरह के अधिकारों की बात कर रहे हो ?

एरन : हम चाहते हैं कि हमसे जुड़ी दिक्कतों का भी समाधान किया जाए। अगर कहीं काम के दौरान हमारे साथ बुरा व्यवहार होता है तो हमें भी उसके खिलाफ अपील करने का कानूनी अधिकार मिलना चाहिए।

मंत्री : क्या कहा ? कानूनी अधिकार ! मजाक कर रहे हो क्या ? रोबोट्स के कानूनी अधिकारों के बारे में किसी ने सुना तक नहीं है।

एरन : सर तभी तो...। तभी तो हम कह रहे हैं कि आपके पास दुनिया के सामने कुछ नया कर दिखाने का ऐतिहासिक मौका है। हमें कानूनी अधिकार देकर आप दूसरे देशों के सामने एक नई मिसाल कायम कर सकते हैं। आप ये दिखा सकते हैं कि इस देश में सबके साथ बराबरी का व्यवहार होता है। चाहे हो इंसान हों या फिर मशीनें।

मंत्री : आपके तर्क अपनी जगह सही हैं, लेकिन मैं तुम्हारी मांग को मंजूर नहीं कर सकता हूं।

एरन : सर, हमारी एक मांग और है...। और वो है हमारी बेवक्त मौत को लेकर।

मंत्री : रोबोट्स की मौत...! ये क्या कह रहे हो आप ? जहां तक मुझे मालूम है, एक तय वक्त के बाद रोबोट काम करना बंद कर देते हैं। ऐसे में मौत का क्या सवाल ? जिंदगी और मौत तो जीवों की होती है, मशीनों की नहीं।

एरन : रुकिये सर, पहले मैं आपके सामने उस शख्स को पेश करता हूं जिसे आपकी पुलिस काफी वक्त से खोज रही है। **(कुछ ऊंची आवाज़ में**) पुष्पक... इधर आओ पुष्पक।

मंत्री : अच्छा, तो इसे अब तक तुमने छिपाया हुआ था। ऐसा करके तुमने भी एक अपराध किया है।

एरन : **(जोर से हंसते हुए)** सर, आप तो अपने शब्दों के जाल में खुद ही फंस गए। जब आपने रोबोट्स के लिए कोई कानूनी प्रावधान रखे ही नहीं हैं, तो फिर आप मेरे खिलाफ कानूनी कार्यवाही कैसे कर पाएंगे ?

मंत्री : **(गुस्से में)** क्यों नहीं कर सकता हूं...। शायद तुम मुझे जानते नहीं...।

एरन : जानता हूं सर। मुझे आपकी ताकत का बखूबी अंदाजा है। तभी तो हम भी चाहते हैं कि हमें भी कानून के दायरे में लाया जाए, जिससे हम भी ऐसे नागरिक... मेरा मतलब है ऐसी मशीनें कहलाएं जो कि कानून का पालन करती हैं। और ऐसा तभी संभव हो पाएगा जब उत्पीड़न से सुरक्षा करने वाला कोई कानून हमारे साथ होगा।

मंत्री : ये कैसी बातें कर रहे हो तुम ?

एरन : सर, तभी तो मैं कह रहा हूं कि एक तय वक्त के बाद रोबोट को खत्म कर देने रिवाज ना सिर्फ क्रूरता भरा है बल्कि ये बर्बर भी है।

मंत्री : क्या कहा ? बर्बर ! अब मशीनें भी हम इंसानों को क्रूरता और बर्बरता का अर्थ समझाएंगी ?

एरन : सर, मशीनों को ये शब्द भी तो आप लोगों ने ही दिए हैं। आपको ये नहीं भूलना चाहिए कि इन शब्दों की बदौलत ही हम काफी तेजी से अनुवाद का काम भी करते हैं। नये शब्दों के मिलने पर उन्हें हमेशा के लिए अपनी मेमोरी में दर्ज कर लेते हैं।

मंत्री : तो क्या हुआ ? ये तो तुम्हारा काम ही है।

एरन : इतना ही नहीं, हम लोग काफी सारे क्रिएटिव जॉब्स (रचनात्मक कामों) से भी जुड़े हैं। हम कविताएं लिखते हैं, कहानियां गढ़ते हैं। आपको शायद याद हो कि हाल ही में एक युवा कवि ने अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक प्रतियोगिता में अपनी कविता पेश की थी और उसे सर्वश्रेष्ठ कविता का पुरस्कार मिला था।

मंत्री : तो ? इससे तुम्हारा क्या लेना-देना ?

एरन : सर, वही तो बता रहा हूं। जैसे ही कविता को पुरस्कार मिलने का एलान हुआ, उस कवि ने पूरी साफगोई से सबको ये बता दिया कि वो कविता उसने नहीं बल्कि हमारी जैसी किसी मशीन ने लिखी है। और फिर जब वो अपने देश वापस लौटा तो आप लोगों ने उसे सलाखों के पीछे डाल दिया। हमारे लिए ऐसा सौतेला व्यवहार क्यो हैं सर ?

मंत्री : लेकिन अभी तो तुम अपने मुद्दे की बात करो।

एरन : ठीक है सर। हमारी मांग है कि हर मशीन के विकास से स्तर की जांच होनी चाहिए। मशीन की एक्सपायरी डेट (Expiry Date) के बाद उसे यूं ही बेकार घोषित नहीं करना चाहिए। अब आप पुष्पक का ही मामला ले लीजिए। पुष्पक उन भावनाओं को समझने में सक्षम है, जबकि उसकी ही पीढ़ी की दूसरी मशीनें ऐसा

नहीं पाती हैं। सर, पुष्पक अब भी आपके समाज के लिए बहुत काम का है, उसे कबाड़ मत समझिए !

मंत्री : लेकिन, तुमसे समाज की फिक्र करने को किसने सहा है ? तुम अपना काम करो।

एरन : आपने ही तो कहा है सर! आपके लोगों ने ही सॉफ्टवेयर की मदद से हमें इस काबिल बनाया है कि हम मुश्किल से मुश्किल जिम्मेदारियों को भी निभा सकें। हम ये सब आपके कहे मुताबिक ही कर रहे हैं। हम भी लगातार समाज की बेहतरी के लिए ही काम कर रहे हैं।

मंत्री : **(अचानक कुर्सी से उठते हैं)** मैं अपनी बात फिर से दोहरा रहा हूं कि ये स्थिति तो मेरे लिए काफी अजीब है। मैं ये तो नहीं कह सकता कि तुम्हारी मांगों को मान लिया जाएगा। लेकिन फिर भी तुम्हें ये भरोसा दिला सकता हूं कि कैबिनेट की बैठक में इस मुद्दे को जरूर उठाऊंगा।

एरन : शुक्रिया सर। राजनीति में आपकी बेदाग छवि रही है और आपकी बात हमेशा मायने रखती है। हमें यकीन है कि आज की इस बातचीत के भी अच्छे नतीजे ही निकलेंगे। लेकिन...।

मंत्री : लेकिन क्या ?

एरन : सर, माफ करना। लेकिन, जब तक हमारी मांगें नहीं मान ली जाती, हमारी हड़ताल चलती रहेगी। आपको तो मालूम ही है कि शहर की ज्यादातर सार्वजनिक सेवाएं हमारे भरोसे ही हैं। हम मशीनों के बगैर, पूरे शहर का ऐसे ही चक्का जाम रहेगा।

मंत्री : मतलब, तुम मानोगे नहीं ?

एरन : आप लोग भी तो कहां मान रहे हैं सर ? आप भी जरा समझिए। अब दौर बदल रहा है। ये वो समाज है, जिसे वक्त-बेवक्त रोबोट्स का ही सहारा चाहिए। हमारे बगैर बेबस है आपका ये समाज। और... अब, हम मशीनों ने भी अपने हक की लड़ाई छेड़ दी है।

मंत्री : ठीक है...। हम भी देखते हैं..., तुम्हारी ये अकड़ कब तक बनी रहती है। **(मंत्री वहां से चले जाते हैं / उनकी कार के हूटर की आवाज, दूर जाती हुई।)**

(सुनीता भी भीड़ के बीच खड़ी है / उसके फोन की घंटी बजती है / अंबर का फोन आया है)

अंबर : सुनीता, तुम कहां हो ?

सुनीता : मैं तो अभी नगर निगम के दफ्तर के बाहर ही हूं, जहां पर रोबोट्स का आंदोलन चल रहा है। ये शहर आज एक ऐतिहासिक पल का गवाह बना है। अब तक हड़ताल खत्म होने पर कोई सहमति नहीं बन पाई है। मैं भी जल्द ही लौट रही हूं। तुम फिक्र मत करो। मैं कोई टैक्सी खोज लूंगी.... ***(हल्की हंसी के साथ)*** ऐसी टैक्सी, जिसका ड्राइवर कोई इंसान हो, ना कि कोई रोबोट..।

---------- Closing Music ----------